डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य
(Assistant professor),
हिन्दी विभाग ,
डी.बी. कॉलेज जयनगर,
मधुबनी (बिहार)

अध्ययन सामग्री
स्नातक, प्रथम वर्ष,
राष्ट्रभाषा हिन्दी (अंक 50) के लिए।

'रश्मिरथी' की कथावस्तु

(पूर्व व्याख्यान का शेषांश)

'रश्मिरथी' के चौथे सर्ग में अर्जुन के देव पिता इन्द्र ब्राह्मण के छद्म वेश में कर्ण का कवच-कुंडल माँगने के लिए उसके पास जाते हैं, क्योंकि कवच और कुंडल के रहते हुए कर्ण का पूरी तरह पराजित होना संभव नहीं था। संध्या-पूजन के समय कर्ण से जो भी याचक जो कुछ माँगता था, वह निःसंकोच दिया करता था। इन्द्र ने भी याचना के लिए इसी समय को चुना। हालाँकि इन्द्र के छल छद्म की योजना का पता कर्ण को अपने देव पिता सूर्य के माध्यम से पहले ही हो चुका था, फिर भी उनके याचना करने पर कर्ण ने अपन शरीर से छीलकर कवच और कुंडल उन्हें दे दिया। इंद्र अपने कुकर्म पर लज्जित हुए और उन्होंने कर्ण से कोई न कोई वरदान माँग लेने का अत्यधिक आग्रह किया। अपनी ग्लानि दूर करने के लिए उन्होंने कर्ण को एकघ्नी वाण दिया जिसे वह अर्जुन को मारने के लिए मन में सँजोये रखता है।

पाँचवें सर्ग में इस प्रकार की कथा है कि सारे प्रयत्नों के बावजूद महाभारत का युद्ध निश्चित हो ही गया और जब एक दिन का ही समय रह गया तो अपने दोनों पुत्रों के भविष्य की ओर से आशंकित कुंती स्वयं हिचक और डर के बावजूद कर्ण के पास गयी और उसने स्वयं कर्ण के जन्म की सारी बातें उसे बता दी। उसने कर्ण से कौरवों का पक्ष छोड़कर अपने भाइयों के साथ मिल जाने का आग्रह किया। पहले तो कर्ण ने उसे बहुत खरी-खोटी सुनायी। कुंती की आँख से आँसू गिरते रहे। कुंती ने जब उसकी दानशीलता की बात भावुकता पूर्वक की तब कर्ण ने द्रवित होकर कहा कि मेरे पास से कोई खाली हाथ नहीं जाता। मैं तुम्हें भी खाली हाथ नहीं जाने दूँगा; और फिर यह वचन दिया कि अर्जुन के सिवा रणक्षेत्र में अन्य किसी पांडव को नहीं मारूँगा। यदि अर्जुन मेरे द्वारा मारा गया तो मैं दुर्योधन का साथ छोड़कर अपने भाइयों से आकर मिल जाऊँगा, जिससे तुम पाँच पुत्रों की माता बनी ही रहोगी। हालाँकि जिस अर्जुन के रक्षक श्रीकृष्ण हैं उसका विनाश नहीं होगा। तुम चार-छह के हिसाब को छोड़ो। युद्ध होगा ही और तुम्हारे पाँच पुत्र बरकरार रहेंगे। कुंती काफी हद तक निराश होकर वहाँ से चली आयी।

छठे सर्ग में कर्ण के लिए दुर्योधन के अतिशय प्रेम और असंतुलित उत्साह के कारण तथा स्वयं कर्ण के बड़बोलेपन के कारण भी भीष्म पितामह उसे 'अर्धरथी' कह देते हैं। इस कारण से कर्ण प्रतिज्ञा कर लेता है कि जब तक भीष्म पितामह सेनापति रहेंगे वह नहीं लड़ेगा। दस दिनों के बाद जब भीष्म जी शरशय्या पर गिर जाते हैं तब द्रोणाचार्य के सेनापति बनने पर कर्ण युद्धभूमि में उतरता है। भीष्म से अपमानित होने के बावजूद वह शीलवश उन्हें प्रणाम करने जाता है। भीष्म जी उससे बहुत सहानुभूति से पेश आते हैं और समझाते हैं कि अब युद्ध समाप्त हो जाना चाहिए। परंतु कर्ण नहीं मानता है। वह युद्धक्षेत्र में उतरकर पांडवों की सेना को छिन्न-भिन्न कर देता है। अपनी सेना का विनाश होते देखकर पांडवों के द्वारा घटोत्कच को बुलाया जाता है जिससे कौरव सेना त्रस्त हो जाती है। दुर्योधन के दुराग्रह पर कर्ण इंद्र द्वारा प्रदत एकघ्नी का उपयोग करके घटोत्कच का वध कर देता है और उससे अर्जुन के मारने का उसका सपना वहीं बिखर जाता है। कौरव बहुत खुश होते हैं घटोत्कच की मृत्यु के कारण, परंतु कर्ण दुखी रहता है। इसी प्रकार पांडव घटोत्कच के वध से बहुत दु:खी रहते हैं, परंतु श्रीकृष्ण खुश रहते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि अर्जुन अब बच गया।

सातवें वर्ग में द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद कर्ण के सेनापति बनने का वर्णन है। सेनापति बनने के बावजूद कर्ण के पास अनेक विषम परिस्थितियाँ थीं। एक तो वह अपना कवच-कुंडल इन्द्र को दे चुका होता है। इन्द्र से प्राप्त अस्त्र का उपयोग घटोत्कच वध में हो जाता है। इस पर भी उसने कुंती को वचन दिया था कि वह अर्जुन के अतिरिक्त अन्य किसी पांडव को नहीं मारेगा; और इसके अतिरिक्त अर्जुन से युद्ध में बराबरी की स्थिति रख पाने के लिए उसे श्रीकृष्ण की टक्कर का सारथी चाहिए था, जिसके लिए वह नकुल और सहदेव के मामा शल्य को चुनता है, जो कि उसे कटुवचन से हतोत्साहित करने का काम करते रहता है। इसके बावजूद कर्ण वीरतापूर्वक लड़ता है। अर्जुन को छोड़कर शेष पांडवों को अनेक बार असहाय स्थिति में पकड़ लेने पर भी वह अपने वचन की रक्षा के लिए छोड़ देता है। वह नीति का भी पालन करता है और अश्वसेन नाग की सहायता अर्जुन को मारने के लिए नहीं लेता है और इस प्रकार अपने धवल चरित्र की रक्षा करता है। अंततः रथ का पहिया धँस जाने से उसे निकालते हुए वह अर्जुन के हाथों मारा जाता है। श्रीकृष्ण कर्ण के उज्ज्वल चरित्र का स्पष्ट शब्दों में बखान करते हैं और उसे मनुष्यता को राह दिखाने वाला महानायक मानते हैं। इस प्रकार रश्मिरथी खंडकाव्य का समापन होता है।